मात्रा को नापती है जो कि निर्यातों द्वारा खरीदा जाता है।

(3) **एक साधनात्मक व्यापार शर्तें** — इस धारणा का प्रतिपादन प्रो० जैकब वाइनर ने वस्तु व्यापार शर्तों में सुधार करने के लिए किया है। वस्तु व्यापार शर्तों में उत्पादन के साधनों की उत्पादकता की अवहेलना की गयी है। इस धारणा के अनुसार आयात तथा निर्यात के मूल्य सूचक अंकों के अनुपात को निर्यात वस्तुओं के लिए आवश्यक उत्पादन साधनों की उत्पादकता के अनुसार समायोजित कर देना चाहिए।

अतः एक साधनात्मक व्यापार शर्तों को अनुमान लगाने के लिए वस्तु व्यापार शर्तों को निर्यात उत्पादकता सूचकांक से गुणा कर दिया जाता है अर्थात $S = NZ_x$. यहां S = एक साधनात्मक व्यापार शर्तें, N शुद्ध अदल बदल वाली व्यापार शर्तें, Z_x निर्यातों की उत्पादकता का निर्देशांक को सूचित करता है।

(4) **द्वि-साधनात्मक व्यापार शर्तें** — एक साधनात्मक व्यापार शर्तों में निर्यात वस्तुओं को उत्पादन करने वाले साधनों की उत्पादकता को ध्यान में रखा जाता है परन्तु आयात की जाने वाली वस्तुओं को उत्पन्न करने वाले साधनों की घरेलू उत्पादकता पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता। अतः द्वि साधनात्मक व्यापार शर्तों में अन्दर व्यापार शर्तों

Ajanta Oxford

Scanned with CamScanner

के निर्धारण में निर्यात तथा आयात दोनों के साधनों की उत्पादकता को समान महत्व दिया जाता है द्वि-साधनात्मक व्यापार शर्तों का अनुमान लगाने के लिए वस्तु व्यापार शर्तों को निर्यात उत्पादकता निर्देशांक तथा आयात उत्पादकता निर्देशांक के अनुपात से गुणा कर दिया जाता है

(5) **वास्तविक लागत व्यापार शर्तें** — इस धारणा का प्रतिपादन जैकब वाइनर ने किया है इसके अन्तर्गत आयात तथा निर्यात वस्तुओं की उनकी उपयोगिता के अनुसार तुलना की जाती है। आयात तथा निर्यात दोनों की वास्तविक लागत निकाली जाती है। निर्यात की वास्तविक लागत उपयोगिता का त्याग है तथा आयात की वास्तविक लागत उपयोगिता की प्राप्ति है इन दोनों का अन्तर विदेशी व्यापार के वास्तविक लाभ का सूचकांक है इसे निम्न सूत्र के द्वारा ज्ञात किया जा सकता है। $R = \frac{Px_1/Px_0}{Pm_1/Pm_0} \times \frac{Fx_0}{Fx_1} \times \frac{xR_0}{xR_1}$। यहां R वास्तविक लागत की शर्तों को बतलाता है। xR_0/xR_1 निर्यात वस्तुओं में निहित उपयोगिता त्याग की मात्रा का सूचकांक है।

(6) **उपयोगिता या बाजार की व्यापार की शर्तें** — प्रो० केर्सी पूर्दा ने कुछ एवं विशुद्ध वस्तु विनिमय व्यापार की शर्तों के संयोग को बाजार व्यापार के रूप में व्यक्त किया है वाइनर के अनुसार जब वास्तविक लागत व्यापार शर्तों में आयातों एवं त्यागी वस्तुओं की सापेक्षिक उपयोगिता के सूचकांक से गुणा कर दिया जाता है तो उपयोगिता व्यापार शर्तें ज्ञात होती हैं इसे सूत्र के रूप में इस प्रकार व्यक्त करते हैं — $Um_1/Ua_1 / Um_0/Ua_0$ यहां U औसत उपयोगिता का सूचक है m आयातित वस्तुएं a = त्यागी गयी वस्तुएं 0 = आधार वर्ष तथा 1 = चालू वर्ष का सूचक है।

इस सूचकांक को वास्तविक लागत व्यापार शर्तों से गुणा करने पर उपयोगिता या बाजार की व्यापार शर्तों का सूत्र निम्न प्रकार से होगा

$$\frac{Px_1/Px_0}{Pm_1/Pm_0} \times \frac{Fx_0}{Fx_1} \times \frac{xR_0}{xR_1} \times \frac{Um_1/Ua_1}{Um_0/Ua_0}$$

प्रो० रॉबर्टसन उपयोगिता व्यापार की शर्तों को ही वास्तविक व्यापार की शर्तें मानते हैं।

व्यापार की शर्तों के अध्ययन के पश्चात निम्नलिखित बातें स्पष्ट होती हैं (1) सकल वस्तु विनिमय व्यापार की शर्तों (G) द्विघटक व्यापार शर्तों (D) वास्तविक लागत शर्तें (R) उपयोगिता व्यापार की शर्तों U की गणना बहुत कठिन है। (2) यदि हम स्पष्ट रूप से सकल वस्तु विनिमय ~~व्यापार~~ व्यापार की शर्तों (G) को जानना चाहें तो हमें एक पक्षीय भुगतान के विभिन्न प्रकारों में भेद करना चाहिए जो एक कठिन कार्य है। (3) द्विघटक व्यापार शर्तों और शुद्ध वस्तु विनिमय व्यापार शर्तों के अन्तर की सीमा को जानना भी कठिन है (4) चूंकि उपयोगिता की गणना एक विवादग्रस्त विषय है अतः वास्तविक व्यापार की शर्तों तथा उपयोगिता व्यापार की शर्तों की गणना करना भी जटिल समस्या है